हिन्दी के बाल साहित्य की विविध विधाओं पर अध्ययन

Pinki*

Assistant Professor
Sanatan Dharam Mahila Mahavidyalaya, Hansi, Haryana, India

***Email ID**: vikas.bhambu@gmail.com*

Accepted: 07.01.2023 **Published**: 01.02.2023

मुख्य शब्दः हिन्दी, बाल साहित्य।

शोध आलेख सार

हिंदी के बाल साहित्य में कहानियां, कविताएं, नाटक, लघु कथाएं और उपन्यास जैसी विविध विधाएं होती हैं। इनमें से कुछ नैतिक मूल्यों को बताती हैं, जबकि अन्य रोचक किस्सों को सम्मिलित करती हैं। बच्चों के लिए लघु कथाएं बहुत ही मनोरंजक होती हैं जबकि कहानियां बच्चों को शिक्षा भी देती हैं। कविताएं बच्चों के लिए रोचक होती हैं जो उनकी भावनाओं को समझाती हैं। हिंदी के बाल साहित्य में नाटकों की भी विविधता है और ये बच्चों के लिए संगीत और नृत्य सहित होते हैं।

पहचान निशान

*Corresponding Author

© IJRTS Takshila Foundation, Pinki, All Rights Reserved.

हिंदी की बाल साहित्य की विधाएँ

बाल साहित्य लेखन हमेशा से बहुत आकर्षित करता है.. सबसे अच्छी बात ये लगती है कि बाल लेखन के समय मन भी बच्चा बन जाता है ...हिंदी की बाल साहित्य की विधाएँ – देखा जाए तो लगभग 27 साल से सक्रिय हूं। दिल्ली सिटी केबल से अपने कार्य की शुरुआत की। राष्ट्रीय समाचार पत्र–पत्रिकाओं के साथ–साथ लोटपोट, चंपक, बालहंस, बालभारती, नैशनल बुक ट्रस्ट की न्यूज बुलेटिन आदि में इनके लेख, कहानी एवं प्रेरक प्रसंग नियमित रूप से छपते रहे हैं। इसके साथ–साथ इन्होंने जयपुर और हिसार आकाशवाणी के कई प्रोग्राम में भी भाग लिया और एकंरिंग भी की। आकाशवाणी रोहतक से इनके द्वारा लिखित नाटक एवं झलकियां प्रसारित होती रही हैं। बाल नाटक बहुत लिखे जोकि आकाशवाणी में भी

प्ररसारित हुए अभी तक 8 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। दो किताबों को बाल साहित्य सम्मान मिला है हरियाणा साहित्य अकादमी की ओर से ... हिंदी की बाल साहित्यकार – बाल साहित्य की विधाएँ –
'मैं हूं मणि' को 2009 में हरियाणा साहित्य अकादमी की तरफ से बाल साहित्य पुरस्कार मिला।बच्चों की कहानियों का सकंलन है।

बाल कहानी

बाल कहानी से तात्पर्य है कि वह कहानी जो बालकों के लिए लिखी गई हो। बालक कहानी में बालकों के संसार का चित्रण होता है। बाल कहानी में बालक की मनोकांक्षाओं और भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। कहानी का अर्थ है – कल्पित या वास्तविक घटना का चित्रण या वर्णन करना जिसका उद्देश्य पाठक का मनोरंजन करते हुए वस्तुस्थिति से परिचित कराना। गीत और कविता के बाद बच्चों के लिए सबसे अधिक हृदयकारी विधा कहानी है। जिस प्रकार गीतों का प्रचलन मौखिक रूप से हुआ था उसी प्रकार बच्चों की कहानियों की शुरूआत दादी–नानी द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों से होती हैं। इन कहानियों में शिल्प कौशल भले ही नहीं हो परंतु बच्चों को प्रेरित करने, शिक्षा देने की क्षमता अवश्य निहित होती थी। वस्तुतः सच्ची बाल कहानियाँ खाँड की वह रोटी है, जो शुरू से अंत तक मिठास से भरी रहें। तभी चंचल बाल मन को बाँध सकने में समर्थ होगी।

ऐतिहासिक बाल कहानियाँः– बाल कहानियों का आधार इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं जिनका आश्रय ग्रहण कर बहुत रोचक और सरल रूप में कहानियाँ प्रस्तुत की गई हैं। ऐसे ऐतिहासिक पात्र जो जीवन के उच्चादर्शों मानवीय गुणों तथा सामाजिक व्यवहार के आदर्श रूप में प्रतिष्ठित होते हैं जो अपने अलौकिक चरित्र से बालकों के प्रेरित संस्कारित कर सकते हैं। वर्तमान में बाल साहित्य में ऐतिहासिक कहानियों का विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि ये कहानियाँ बच्चों को मनोरंजक रूप में अतीत का साक्षात्कार करवाते हुए उनमें वीरता, साहस, कर्त्तव्य परायणता, अवसरों को पहचानने की क्षमता, देशभक्ति आदि अनेक गुणों के विकास में सहायक बनती है। महाराज चम्पतराय की औरंगजेब से शत्रुता थी। दोनों में बराबर युद्ध होता रहता था। औरंगजेब ने संधि प्रस्ताव भेजा। युद्ध से ऊबे चम्पतराय ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और राजत्व छोड़कर जागीरदार बनकर रहने लगे। पर वीर और रानी ने यह स्वीकार नहीं किया था कि छत्रसाल ऐसा काहिली का जीवन व्यतीत करें। अतः उसने कहा– पहले मुझे लोग एक शूरवीर राजा की रानी कहते थे लेकिन अब मुझे दिल्ली के बादशाह के जागीरदार की रानी कहते हैं। ओरछा में मैं सचमुच में रानी थी। मेरा स्वयं का राज्य था और साथ ही आप उसके राजा थे। रानी के इस विचार ने चम्पतराय को सचेत कर दिया। वे छतरपुर लौट गए और वीरता का जीवन बिताया। वीरता की रक्षा करते हुए उनकी मृत्यु हो गयी। ऐसी कहानियों से ऐतिहासिक शान के साथ ही मानवीय संवेदना का भी विस्तार होता है।

परीकथाएँः–

शब्दकोश के अनुसार फ्रेंच भाषा में यह शब्द, वास्तव में लैटिन के फेरा से आया। जिसका अर्थ है – परी शब्द पर से बना है। पक्षियों को परेवा भी कहते हैं अर्थात् पर वाले जीव। परी का अर्थ हुआ पंखधारी।

परियाँ बच्चों को चंद्रलोक की सैर कराती हैं। उन्हें सद्‌गुणों के बहुत निकट, यथार्थ जीवन की निराशा फिर भी संसार के समस्त प्रणी उसी से चेतना प्राप्त करके आनंदित होते हैं। परियों की शहजादी नामक कविता में नानी–दादी की कहानी के माध्यम से आसमान के ऊपर रहने वाली किसी परियों की शहजादी के प्रति जिज्ञासा वृत्ति का वर्णन करके कवि ने बाल मन की सामर्थ्य का अनुमान लगाकर उसी रहस्यमयी सत्ता की ओर संकेत किया है –

‘‘एक कहानी सदा सुनाया, करती बूढ़ी दादी।
आसमान के ऊपर रहती, परियों की शहजादी।।
सोने–चाँदी के पर वाली, सुंदर रंग रंगीली।
कितनी हँसमुख कितनी चंचल, है कितनी शरमीली।
मम्मी–पापा ने उसको, दे रक्खी है आजादी।’’

जासूसी कहानियाँः– जासूसी का विकास अपराधों का पता लगाने के लिए हुआ था। अपनी सूक्ष्म बुद्धि का प्रमाण तथा तर्क–वितर्क के आधार पर जासूस अपराधों की तह तक पहुँच जाते हैं। किन्तु जासूस अपने काम में जितने मुस्तैद और कुशाग्र होते हैं, अपराधी भी उतने ही बुद्धिमान होते हैं। जासूसी साहित्य के संबंध में जैंसी लेरिक ने कहा है – आठ से तेरह वर्ष की उम्र के बालक इस साहित्य को तीव्र गति से पढ़ते हैं। इस उम्र के आधे बच्चे तो एक से लेकर पाँच पुस्तकें तक प्रति सप्ताह पढ़ते हैं। बीस प्रतिशत से अधिक बच्चे छः से दस पुस्तकें प्रति सप्ताह पढ़ते हैं। लड़कियाँ इस साहित्य के प्रति अधिक आकृष्ट नहीं होती।

साहसी कहानियाँः– जीवन बड़ों का हो या बालकों का साहस की दोनों को आवश्यकता होती है। सामान्य जीवन में साहस शक्ति का संचार करता है। जबकि आकस्मिक कठिनाईयों में साहस शक्ति बढ़ाकर बचने या कठिनाई पर विजय दिलाने में सफल होता है।

वैज्ञानिक एवं पर्यावरण की कथाएँः– हिन्दी बाल कथाओं के विज्ञान परक लेखन में दो दृष्टियाँ हैं – विज्ञान की जानकारी देना तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना। प्रथम कोटि की बाल कहानियाँ लेखन हेतु विज्ञान की ठोस जानकारी आवश्यक है, क्योंकि लेखक अपने बाल पाठकों की वैज्ञानिक तथ्यों से अवगत करता है। दूसरी कोटि की बाल कहानियों में अंधविश्वास का खंडन तथा प्रदूषण से बचाव जैसे विषयों द्वारा बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास किया जाता है।

पशु–पक्षियों, जीव–जंतुओं से जुड़ी बाल कथाएँः– अंग्रेजी में रूडयाड किपलिंग की पुस्तक ‘जंगलबुक’ पं. विष्णु शर्मा की पंचतंत्र इस तरह की कथाओं के अंतर्गत आते हैं। ‘जंगलबुक’ के माध्यम से पात्र मोगली भेड़िया मानव जो टी.वी. के माध्यम से बालकों तक पहुँचाया गया। इस प्रकार की कहानियों के माध्यम से बच्चों में पशु–पक्षियों, जीव–जंतुओं, पादप आदि को लेकर जानकारी बढ़ती है एवं पर्यावरण चेतना विकसित होती है।

बालगीत

बालगीत बाल साहित्य का अभिन्न अंग है। अत्यंत प्राचीनकाल से मानव समाज में बालगीत रचे या सुने जाते है। बालगीतों में लोरियों का समावेश होता है, जिन्हें बच्चे सुनते–सुनते माँ की गोद में सोते हैं। इन गीतों में माँ के हृदय की ममता और निर्मल वात्सल्य की सरल अभिव्यक्ति होती है। जैसे – आरी नींदी लाल को आजा, उसको प्यार से सुलाजा। इन गीतों की लयात्मकता के कारण ही बच्चे इनसे प्रभावित होते हैं। कभी–कभी इन गीतों में भावों का कोई पारस्परिक तारतम्य नहीं होता। जैसे – हाथी–घोड़ा पालकी, जय कन्हैयालाल की। ऐसी लोरियाँ या शिशुगीत एक विशिष्ट उम्र के बच्चों को आनंदित करते हैं।

निरंकारीदेव सेवक के अनुसार – गीत की अतिशय वैयक्तिकता और संगीतात्मकता ही उसे कविता से भिन्न कर देते है। कविता ऐसे विषयों पर लिखी जा सकती है जिनका व्यक्ति विशेष के अपने मनोभावों से कोई निज का संबंध न हो। उसका छन्दबद्ध या संगीतात्मक भी होना आवश्यक नहीं। पर गीत उसी कविता को कहा जा सकता है जो स्वानुभूति–निरूपिणी हो, और जिसे संगीत के स्वरों पर साधकर गाया जा सके।

महादेवी वर्मा के अनुसार – गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुखदायक अनुभूति का वह शब्द रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।

प्रमुख बालगीतः–

1992 – ‘अगडम–बगडम’ शांति अग्रवाल

1992 – शिशुगीत – जगदीशचंद्र शर्मा

1993 – ‘गीतों की फुलवारी’ डॉ. मधु भारतीय

‘आओ मिलकर गाएँ गीत’

‘जादू सपना’ – रमेशचंद्र शाह

विज्ञान गीत – जयप्रकाश भारती

‘पद्य–प्रसंग : नेहरू के संग’ – जगदीशचंद्र शर्मा

बाल–संसार समग्र – संतोष साहनी

1994 – हक्का–बक्का – प्रयोग शुक्ल बोल मेरी

मछली कित्ता पानी – कन्हैयालाल मत्त

1995 – चलो सुनाए : पद्यकथाएँ – जगदीशचंद्र शर्मा

1996 – बीन बजाती बिल्लो रानी– निरंकारीदेव सेवक

गेन्द निराली मीठू की – राजेश जोशी

गुड़िया की शादी – डॉ. श्रीप्रसाद

गीतों के इन्द्रधनुष – डॉ. शेरजंग गर्ग

हँसते गाते गीत – चंद्रदत्त इंदु

1997 – तीन तिलंगे – अश्वघोष

गीतों के रसगुल्ले – डॉ. शेरजंग गर्ग

जब हम होंगे बड़े –बालस्वरूप राही

कर दो हड़ताल – योगेन्द्रकुमार लल्ला

तोतेजी – योगेन्द्रकुमार लल्ला

1997 – कहा पेड़ ने – ओमप्रकाश सिंहल

सबसे प्यारा अपना देश – रामप्रसाद मिश्र

सात समंदर पार – इंदिरा गौड़

1998 – चिड़ियाँ रानी – निरंकारीदेव सेवक

खेल तमाशे – कन्हैयालाल मत्त

स्वर्ण हिडोंला – कन्हैयालाल मत्त

रजत पालना – कन्हैयालाल मत्त

एक चपाती – रमेश तेलंग

करे तमाशा प्यारी मुनिया – शकुंतला कालरा

1999 – बिल्ली के बच्चे – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

मधुर गीत भाग–1, 2, 3 तथा 4 – दिविक रमेश

‘उड़ न पाए पतंग का प ‍ – ध्रुव शुक्ल

बूझों तो जानें – विनोद शर्मा

हँसते मुसकराते सपने – रोहिताश्व आस्थाना

2000 – कहाँ बनाए घर गौरेया – सुरेश विमल

गीत खिलौने – प्रभाकिरण जैन

मामाजी की अमराई – शंभुलाल शर्मा वसंत

आओ पापा बात करें – घमंडीलाल अग्रवाल

चीं–चीं चिड़िया – सं. कृष्ण शलभ

इस प्रकार हिन्दी बाल काव्य की परंपरा लोकगीतों के मौखिक साहित्य की जड़ से पोषण लेकर विकसित हुई और उपदेशात्मक और उद्‌बोधन की शैली को छोड़कर बाल मनोविज्ञान के अनुकूल एवं स्वतंत्र एवं संपन्न विधा बन गयी है।

बाल कविता और बालगीत में अंतरः–

बाल कविता और बाल गीत में पर्याप्त अंतर है, किन्तु वर्ममान में यह पर्याय बन चुके हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि बाल–कविता वह है जिसमें बालकों की भावनाओं का ख्याल रखा गया हो, उनकी कल्पनाऐं, मनोरंजन, जिज्ञासाओं का समाधान होता हो, मनोविज्ञान का आधार ग्रहण कर उनकी इच्छाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति हो सके जिसे बालक बनकर उसकी सोच के अनुसार रचा गया हो। साथ ही जिसके

द्वारा कोई सिद्धांत न गढ़ा जा रहा हो, कोई उपदेश या शिक्षा न हो, जिसमें गुदगुदाने, गुनगुनाने की शक्ति हो, जो सोद्देश्य, रोचक एवं प्रेरक हो, प्रश्न करने की शक्ति रखता हो, जिससे समझ विकसित हो सके एवं जो संवेदनाओं का परिष्कार कर सके। निगूढ़ संकेतों औरप्रतीकों से दूर लेकिन बिंबात्मकता से युक्त हो, जो मानवीय गुणों के साथ सहज, सरल भाषा से युक्त संगीत, लय, तुक और गेयता के योग से युक्त हो। अर्थात् बाल कविता में अन्य तत्वों के अतिरिक्त दो तत्व आवश्यक है –

1. लय, 2. तुक। लय और तुक के संयोजन से ही अच्छा बालगीत बन सकता है। जीवन ही कविता है। मानव के सृष्टि में उत्पन्न होने के साथ ही कविता प्रवाहित हुई। हृदय की धड़कन, सूर्य का निकलना, पौधों का हिलना, सुबह का होना, संध्या का ढलना आदि में एक निश्चित समय और गति की लय है। वस्तुतः कविता सुनने–पढ़ने की ही नहीं, जीवन और सृष्टि के कण–कण में बसे संगीत के साथ लय होने और पूरी प्रकृति अर्थात् सृष्टि में ध्वनित हो रहे गीत को सुनने में है।

डॉ. राष्ट्रबंधु के अनुसार– बालगीत वह सोद्देश्य रचना है जो रोचक, गेय और प्रेरक हो।

डॉ. चक्रधर नलिन के अनुसार– काव्य जीवन का गीत है, प्रतिकृति है, शाश्वत सत्य की सुमधुर अभिव्यक्ति है, आत्मा की सतत् प्रवाहित संगीत धारा है।

निरंकारीदेव सेवक कविता को संगीततत्व से जोड़ते हुए कहते हैं– बाल स्वभाव के पारखी, बच्चों की रुचियों, भावनाओं और कल्पनाओं को अच्छी तरह से समझने वाले ही बालगीत लिख सकते हैं। उनमें अपने मन का बच्चों के मन से तादात्म्य स्थापित करने की शक्ति का होना आवश्यक होता है। यह तादात्म्य करते समय बड़ों को बड़ी–बड़ी बातों का कोई संस्कार उनके मन पर नहीं होना चाहिए।

कविता और संगीत से बच्चों का विशेष आकर्षण है। बचपन में माँ की मधुर लोरियों के सम्मोहन से बालक परिचित ही है। बालकों के जीवन का हर निमिष ताल, लय और संगीत से जुड़ा हुआ होता है।

बाल उपन्यास

उपन्यास शब्द में 'अस' धातु और 'नि' उपसर्ग है। दोनों से न्यास शब्द बनता है। 'न्यास' शब्द में 'उप' उपसर्ग है 'उप' का अर्थ पास रखा हुआ इसलिए उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर इसका अर्थ हुआ 'पास रखी हुई धरोहर' वर्तमान युग में साहित्य की सबसे अधिक प्रिय और सशक्त विधा है उपन्यास। इसमें मनोरंजन का तत्व अधिक रहता है। उपन्यास में जीवन को बहुमुखी छवि के साथ व्यक्त करने की शक्ति होती है। उपन्यास का जन्म आधुनिक काल के यथार्थवादी परिवेश में हुआ। यह आधुनिक सभ्यता की देन है। आधुनिक हिन्दी साहित्य एक अथाह महानद है तो उपन्यास उसके अंदर की एक सर्वशक्तिमान महत्वकांक्षी विधा के रूप में प्रवाहमान धारा है। उपन्यास संसार के फलक पर उपस्थित मनुष्य जीवन के बहुविध आयामों को पूरी संश्लिष्टता के साथ यथार्थ रूप में उद्घाटित करता है। यह एक दीर्घ कथात्मक गद्य रचना है। जिसके अंतर्गत वास्तविक जीवन के प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र और उनकी समस्याओं का चित्रण आता है। बाल कहानियों का बड़ा सर्वांगीण कैनवास आयाम ही उपन्यास है। वैसे ही जैसे कोई दोहा अभिव्यक्ति का विस्तार पाकर कुण्डली छन्द बन जाता है। उपन्यास को साहित्य में आधुनिक युग की देन

माना गया है। उसमें घटनायें कैसी भी हों, लोक की परलोक की, पाताल की, पर वे होंगी कार्य–कारण की श्रृंखला में आबद्ध। उसमें एक तारतम्य होगा, भले ही वे आंतरिक तथा सूक्ष्म हों वे जीवन के किसी पहलू को अवश्य प्रकट करती है। घटनायें, व्यापार, श्रृंखलाये और मानव–मन सब पारस्परिक रूप से एक–दूसरे को स्पष्ट करते चलेंगे।

कविता

कविता के शब्दों की ध्वनि, संगीत की ध्वनि से मिल जाती है तब वे शब्द केवल सुनने से ही आनंद और प्रसन्नता प्रदान करते हैं वे लोरियों, बालगीतों तथा कविताओं के रूप में होती हैं। बच्चों के प्रिय पात्रों, खेलों, मौसमों, वस्तुओं, पशु–पक्षियों में उनकी मानसिक अभिव्यक्ति होती है। इस तरह कविता परिवेश और रुचियों के अनुरूप आनंद देती है। कविता की परिभाषाएँ पूर्व एवं पश्चिम विद्वानों के अनुसार अंग्रेजी के कवि वड्सवर्थ ने उसे तीव्र मनोभावों का अनायास उफ़ान कहा है।

शिल्प–विधानः– भाव यदि कविता की आत्मा है तो शिल्प भाषा, छन्द, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब आदि उसका शरीर है। डॉ. निर्मला के अनुसार – वह भावपूर्ण रचना जिसकी भाषा सरल हो, शब्दावली असंयुक्त और मात्रा–विधान सीमित हो, जिसमें दृष्टिपथ में आने वाली प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष वस्तुओं का वर्णन हो, जिसमें बालक के हृदय तक पहुँचकर व्याप्त होने वाली शक्ति हो, जिसे वह अपने स्वरों के उतार–चढ़ाव के साथ गाकर आनंद प्राप्त करते हुए अपना समझ सके, बाल काव्य है।

इस परिभाषा के अनुसार – भाव के साथ–साथ भाषा, छन्द और गेयता पर बल दिया है अर्थात् कविता में भाव और शिल्प दोनों का उचित सामंजस्य होना बहुत आवश्यक है।

उपसंहार

इस तरह से हिंदी के बाल साहित्य में विविध विधाएं हैं जो बच्चों के लिए मनोरंजक और शिक्षाप्रद होती हैं। ये साहित्य उनकी भावनाओं और सोच को विकसित करने में मदद करता है और उन्हें नैतिक मूल्यों के बारे में सीख देता है। इसलिए हिंदी के बाल साहित्य का महत्वपूर्ण भूमिका है जो बच्चों के विकास में मदद करती है।

संदर्भ –

- संपादक राष्ट्र बंधु, बाल साहित्य समीक्षा, मई 2014, बाल कल्याण संस्थान, कानपुर, पृष्ठ–06
- हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, सन् 2015, पृष्ठ–07
- वही, पृ. संख्या 12
- सुरेन्द्र विक्रम हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्‌भव और विकास साहित्य वाणी, इलाहाबाद, सन् 2019, लेखक द्वारा लिखे गए शंकर सुल्तानपुरी के साक्षात्कार से, पृ.–14
- हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 2018, पृष्ठ–235

- सुरेन्द्र विक्रम, हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्भव और विकास—साहित्य वाणी, इलाहाबाद, 2017, पृ. 13—14
- राजेन्द्र कुमार शर्मा, समकालीन हिन्दी बाल कविता फाल्गुनी प्रकाशन, दिल्ली, सन् 2013, पृष्ठ 143
- शिरोमणि सिंह, बाल कविता में सामाजिक सांस्कृतिक चेतना, आशा प्रकाशन, कानपुर, 2013, पृ. सं. 62
- प्रेम भार्गव, कैसे बने बालक संस्कारी और स्वस्थ—राधाकृष्ण पेपर बैक्स, नई दिल्ली. 2015 पृ. 129
- वही पृ. 130
- शकुंतला कालरा, हिन्दी बाल साहित्य विचार और चिंतन—नमन प्रकाश, नई दिल्ली, 2014, पृ. 09